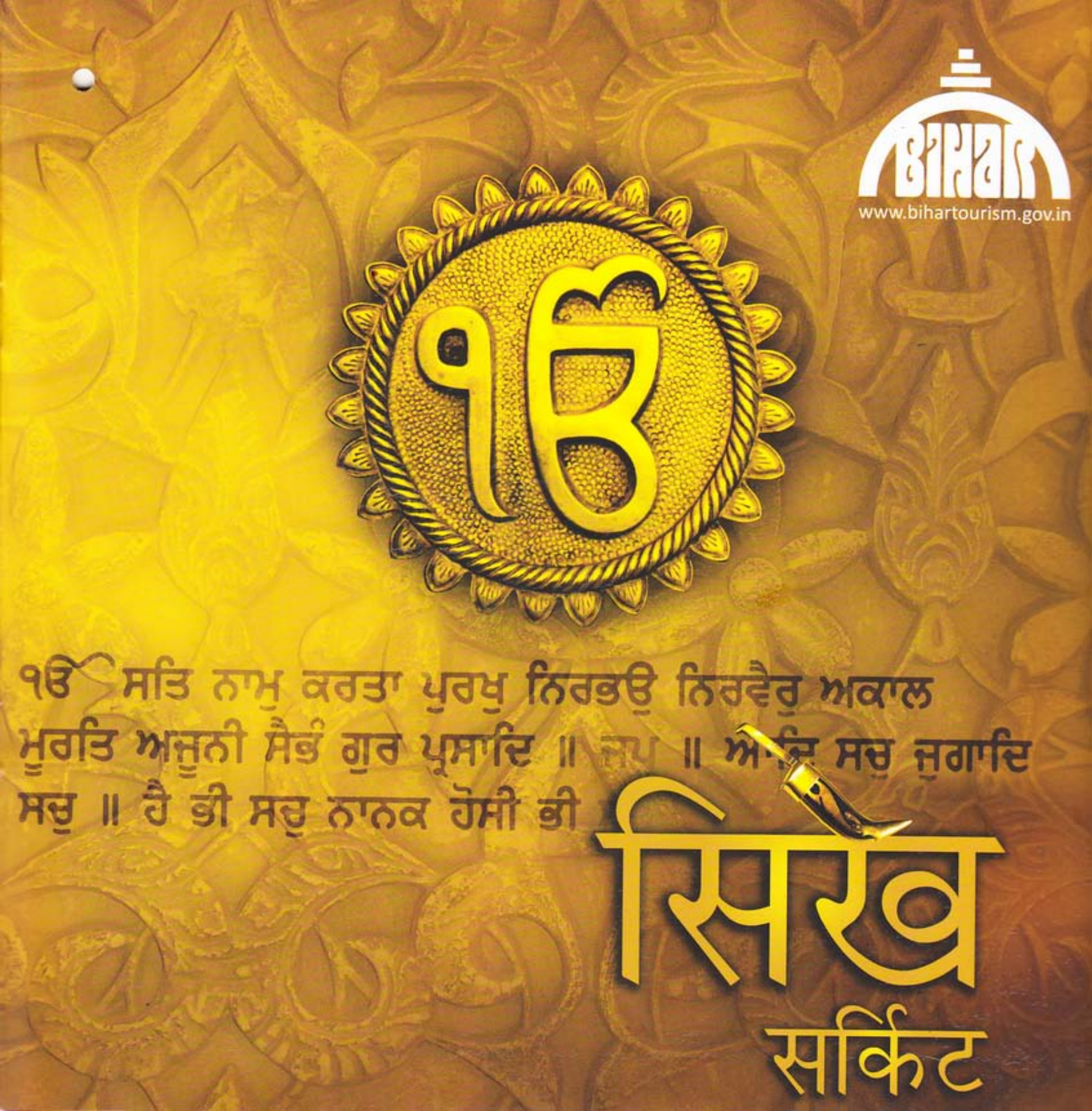

www.bihartourism.gov.in

ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ
ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਜਪੁ ॥ ਆਦਿ ਸਚੁ ਜੁਗਾਦਿ
ਸਚੁ ॥ ਹੈ ਭੀ ਸਚੁ ਨਾਨਕ ਹੋਸੀ ਭੀ

सिख

सर्किट

तख्त श्री हरमंदिरजी, पटना साहिब

तख्त श्री हरमंदिरजी गुरु गोविंद सिंह का जन्म स्थल है, जो सिखों के 10वें गुरु थे। उन्होंने सिखों को पांच तख्तों में एक की स्थापना की थी।

यह वह स्थान है, जहां गुरु नानक ने अपने एक अनुयायी सालीस राय जौरी की हवेली का भ्रमण करने आए थे। सालीस राय गुरु नानक से बेहद प्रभावित हुए और उन्होंने पूरी हवेली को धर्मशाला बनवा दिया। गुरु गोविंद सिंह के पिता गुरु तेग बहादुर थे, जो इस धर्मशाला में कुछ समय के लिए ठहरे थे। गुरु गोविंद सिंह का जन्म यहां 22 दिसम्बर 1666 को हुआ था। गुरु गोविंद सिंह के पिता गुरु तेग बहादुर सिखों के नौवें गुरु थे, जिन्होंने पंजाब में सिखों के बेहद पवित्र धर्मस्थल आनंदपुर साहिब की स्थापना की थी। गुरु गोविंद सिंह एक महान योद्धा और दार्शनिक थे, जिन्होंने सिख समुदाय को एकजुट करने का काम किया। ये गुरु गोविंद सिंह ही थे, जिन्होंने न सिर्फ गुरु नानक के अनुयायियों को एकजुट किया, बल्कि सिख समुदाय को धर्म के रूप में स्थापित किया। उन्होंने मुगल शासक औरंगजेब के खिलाफ कई जंग जीते।

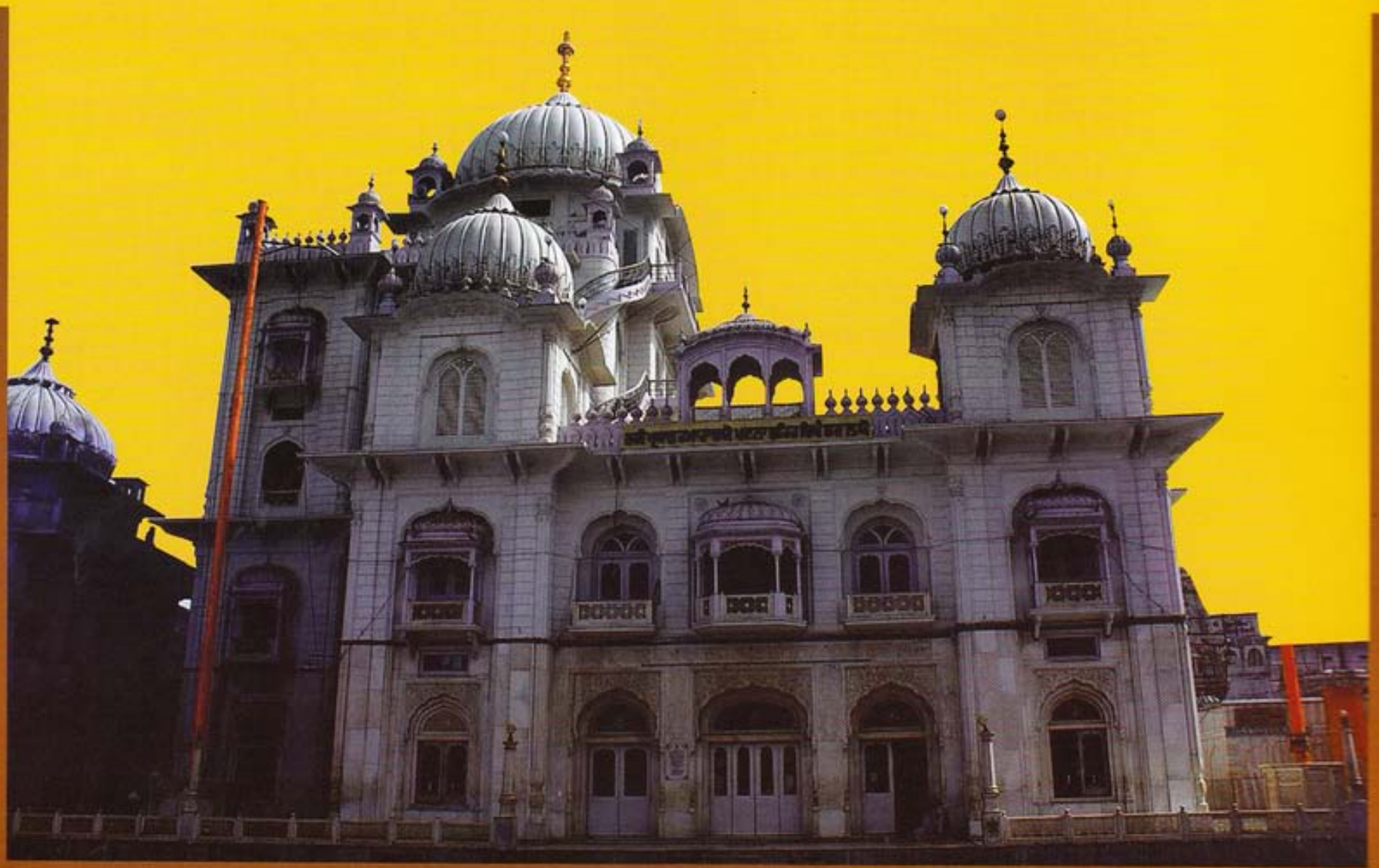

श्री गुरु गोविंद सिंह

गुरु गोविंद सिंह ने पांच 'क' का पालन करने की बात कही, जो सिख धर्म के अनुयायियों की एक विशिष्ट पहचान है।

ये वे पांच चिन्ह हैं, जिन्हें सिख हमेशा धारण करते हैं :-

केश

बाल कभी नहीं कटवाना।

कंघा

लकड़ी की कंघी। यह स्वच्छता का प्रतिक है, जो किसी के शरीर और आत्मा को शुद्ध रखने का काम करता है।

कड़ा

लोहा या स्टील का बना हुआ यह कड़ा हाथों में पहना जाता है। यह किसी को हमेशा अच्छे काम करने के लिए प्रेरित करता है और आत्म रक्षा में भी उपयोग होता है।

कछा

अंदर पहनने वाला वस्त्र, जो किसी को पवित्रता से जीवन यापन करने की सीख देता है।

कृपान

तलवार, जो अपनी रक्षा करने के साथ-साथ बिना कोई धर्म, जाति या समुदाय में भेदभाव किए बिना दूसरे की रक्षा के काम आए।

सिखों के पहले राजा महाराजा रंजीत सिंह ने गुरु के इस पवित्र जन्मस्थल का निर्माण 1839 में करवाया था। 1934 में आए भूकंप में इसके कुछ हिस्से क्षतिग्रस्त हो गए थे। इसके बाद 1954 में मौजूदा हरमंदिर तख्त की बेहद आकर्षक कलाकृति को बनवाया गया था। बेहद आकर्षक गुम्बद के अलावा यहां संगमरमर पर की गई खूबसूरत कलाकृति अध्यात्मिक पवित्रता को बारीकी से दर्शाते हैं।

इस पवित्र स्थल पर जो सामान रखे हुए हैं, जिनका दर्शन करने श्रद्धालू आते हैं, वे हैं-

1. 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब' इसे बड़े साहब कहा जाता है। इसमें श्री गुरु गोविंद सिंहजी महाराज के हस्ताक्षर मौजूद हैं।
2. 'चाबी साहिब', श्री गुरु गोविंद सिंहजी महाराज के बचपन की बड़ी सी तैल चित्र
3. 'पंघुरा साहिब' एक छोटी-सी पीढ़ी, जिसके चारों पाए सोने से जड़े हुए हैं। इसका उपयोग श्री गुरु गोविंद सिंहजी महाराज अपने बालकाल में बैठने और सोने के लिए करते थे।
4. श्री गुरु गोविंद सिंहजी महाराज की एक छोटी 'सैफ' (तलवार)
5. श्री गुरु गोविंद सिंहजी महाराज के लोहे से बने चार तीर
6. श्री गुरु गोविंद सिंहजी महाराज की मिट्टी की बनी एक 'गोली'
7. श्री गुरु गोविंद सिंहजी महाराज की लोहे से बनी एक छोटी 'चकरी'
8. श्री गुरु गोविंद सिंहजी महाराज की लोहे से बना एक छोटा 'खंडा'
9. श्री गुरु गोविंद सिंहजी महाराज की लोहे का छोटा 'बाघनख-खंजर'
10. श्री गुरु गोविंद सिंहजी महाराज की लकड़ी की कंघी
11. श्री गुरु गोविंद सिंहजी महाराज के लोहे के दो 'चक्कर'
12. श्री गुरु गोविंद सिंहजी महाराज के बचपन के हाथी दांत से बने एक जोड़े 'चप्पल'
13. श्री गुरु तेग बहादुरजी महाराज के चंदन से बने एक जोड़े 'चप्पल'
14. श्री कबीर साहब के लकड़ी से बने तीन घुमाने वाले हथियार
15. एक किताब रखी है जिसमें श्री गुरु तेग बहादुरजी महाराज और श्री गुरु गोविंद सिंहजी महाराज के 'हुकूमनमाज' और उनकी तस्वीरें, लेखनी समेत अन्य चीजें मौजूद हैं।

विशाल मंदिर परिसर में कई दुकानें मौजूद हैं, जिनमें धार्मिक चिन्ह और सामान बिकते हैं। यहां एक सामुदायिक किचन भी चलता है, जहां रोजाना खाना बनता है और इसका वितरण रोजाना श्राद्धालूओं के बीच किया जाता है। आगंतूकों को इसमें इसमें अपनी सेवा देने की अनुमति रहती है। खाना बनाने में किसी धर्म, जाति या समुदाय के लोग शामिल हो सकते हैं।

तख्त श्री हरमंदिर साहिब के अलावा चार अन्य गुरुद्वारे भी हैं।

गुरुद्वारा पाहिला बारा

गुरुद्वारा गायघाट के नाम से मुख्य रूप से प्रसिद्ध है। यह गुरुनानक देव को समर्पित है। जब गुरु पटना आए थे, तो यहां आकर ठहरे थे।

गुरुद्वारा बाल लीला मैनी

हरमंदिर साहिबजी के नजदीक ही स्थित है। यह गुरुद्वारा गुरु गोविंदजी के बचपन से जुड़ा हुआ है।

गुरुद्वारा श्री गुरु गोविंद सिंह घाट

गंगा नदी के नजदीक यह गुरुद्वारा स्थित है। यह स्थान भी गुरु गोविंद सिंह के बचपन से संबंधित है।

गुरुद्वारा गुरु का बाग

इस स्थान पर पिता गुरु तेग बहादुर की उनके चार वर्षीय पुत्र से पहली बार मुलाकात हुई थी, जो बाद में चलकर गुरु गोविंद सिंह बने। गुरु तेग बहादुर गुरु नानक के संदेशों को प्रचारित करने के लिए चले गए थे। इस वजह से काफी समय बाद लौटने पर उनकी पहली मुलाकात अपने पुत्र से इसी स्थान पर हुई थी।

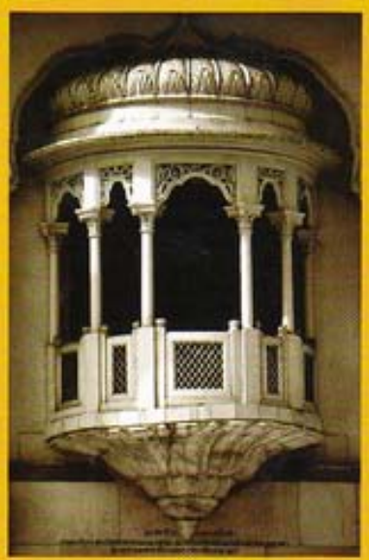

बिहार में मौजूद अन्य गुरुद्वारे इस प्रकार हैं

- दानापुर
  - गुरुद्वारा हांडी साहिब
- सासाराम
  - गुरुद्वारा बारी या तकसाली संगत, गुरुद्वारा चाचा फग्गूमल और गुरुद्वारा गुरु बाग
- गया
  - गुरुद्वारा श्री गुरु तेग बहादुरजी
- मुंगेर
  - गुरुद्वारा पक्की संगत
- भागलपुर
  - गुरुद्वारा बारी संगत श्री गुरु तेग बहादुरजी चौकी
- लक्ष्मीपुर
  - गुरुद्वारा श्री गुरु तेग बहादुर

PATNA

Nearest Airport: Patna/3Kms
Nearest Railway Station: Patna/1Kms

Name: Kautilya Vihar, Beer Chand Patel Path, Patna-1.
Phone: 0612-2225411, 2210219, 2210242
Fax: 0612-2236218.

blissful bihar
BIHAR TOURISM

Department of Tourism, Government of Bihar
Barrack no. 9D, Old Secretariat, Patna 800 015 Bihar, India
Telephone: +91 612 221 7163 | Fax: +91 612 221 5291.
Email: directortourismbihar@gmail.com
www.bihartourism.gov.in